अभी तुम हो संगमयुगी ब्राह्मण और ब्राह्मणियां। बाकी और सब हैं कलियुगी शूद्र बुद्धि। उन ब्राह्मणों की बुद्धि और तुम ब्राह्मणों की बुद्धि में कितना फर्क है।अब तुम जानते हो कि हम सच्चे ब्राह्मण हैं।फिर देवता बन रहे हैं इस योग और पढ़ाई से।शूद्र को शूद्र बुद्धि को अस्वच्छ बुद्धि कहा जाता है।तुम भी अल्प बुद्धि से बेहद की विशाल बुद्धि बनते हो। ....उन विनाश बुद्धि है ना।इनको पाण्डव बुद्धि कहा जाता है।यह तुम बन रहे हो।तुम बच्चों को कितनी प्वाइंट्स मिलती है स्मृति में लाने की।हमको भगवान पढ़ाते हैं।इसलिए ही उनको भगवान भक्ति कहा जाता है ; परंतु है देवी–देवता धर्म।तो तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। मूलवतन में बाबा के साथ हम आत्मायें रहती हैं।उनको कहा जाता है परम आत्मा। तुम भी परमधाम में रहते हो। तुम जानते हो कि बाप पुनर्जन्म में नहीं आते हैं।उनको ज्ञान सागर नालेजफुल कहा जाता है।बच्चे यह तो समझ सकते हैं ना कि यह 84 का चक्र है।इस झाड़ का बीज उपर है।देवी–देवता धर्म है फाउंडेशन।है वो भी मनुष्य ; परंतु वो दैवी गुण वाले हैं इसलिए उनको देवता कहा जाता है।अब तुम जानते हो कि हम ऐसे बन रहे हैं।ऐसे थे।फिर वर्ण बदलते गये।अभी हम ब्राह्मण वर्ण के हैं।यह बातें याद करनी कोई मुश्किल नहीं हैं।अभी हम उंच ते उंच वर्ण के हैं।ब्राह्मण होते ही हैं संगम पर।यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। पुरुषोत्तम युग के कारण पुरुषोत्तम मास भी कहते हैं।पुषोत्तम वर्ष भी कहते हैं।पुरुषोत्तम बनने में हमको 40–50 वर्ष लगते हैं।कनिष्ट से उत्तम बनते हैं।अब बाप समझाते हैं कि भक्तिमार्ग अलग है।उनको ज्ञान नहीं कहेंगे।वो है भक्मि मार्ग का ज्ञान।यह है ज्ञान मार्ग का रुहानी ज्ञान।रुहानी बाप आकर रूहों को पढ़ाते हैं।अंदर में आना चाहिए कि हम आत्मा सुन रही हैं, हम आत्मा बोल रही हैं।आत्मा ना होती तो शरीर कुछ कर ना सके।आत्मा कितनी छोटी है।प्रदर्शनी में भी परिचय देना है आत्मा और परमात्मा का।यह नालेज तुमको पहले थी क्या?आत्मायें कहां से नालेज लावें?इसलिए ही बाप को याद करते हैं हे ज्ञान का सागर आकर नालेज दो।आत्मा का नालेज भी कोई में नहीं है।बाप एक ही बार पार्टधारी बनते हैं। अब तुम जानते हो कि दुनियां पलट रही है।पुराने से नई बन रही है।आत्मा में खाद पड़कर पुरानी हो गई है।अब फिर से नई बन रही है।आत्मा को जंग लग गई है।जब जंग लगती है तो मिट्टी के तेल में डालते हैं।अब आत्मा तो है चैतन्य।इसमें खाद पड़ गई है।वो निकले कैसे?यह समझानी बाप के बिना और कोई दे भी नहीं सकते हैं।बाबा कहते हैं मेरे बच्चे जो उपर से आत्मायें आती हैं वो पवित्र होती हैं।हर चीज ही पहले पवित्र फिर अपवित्र होती है।रावण के राज्य में है भक्ति।ज्ञान हो नहीं सकता है।वो भक्ति मार्ग का ज्ञान है।उससे सद्गति मिल नही सकती।भक्ति से दुर्गति होती है।बाप समझाते हैं कि इसी भक्ति से तुम घृणा लायक बन गये हो।पहले महिमा लायक पूज्य थे।फिर घृणा लायक पुजारी बन गये हो।बाप ही आकर समझाते हैं कि यह रावण कब का दुश्मन है।इतना तो बड़ा दुश्मन है जो हर वर्ष ही उसका बुत बनाकर जलाते हैं।मनुष्य नहीं जानते हैं कि इसका अंत कब होगा।तुम जानते हो कि सतयुग में यह रावण होता ही नहीं है।तुम बच्चों की बुद्धि में यह नालेज है।और सबकी बुद्धि में है शास्त्रों की नालेज।तुमको सिर्फ बाप को ही याद करना है।बुद्धि में है कि ड्रामा का चक्र कैसे फिरता है।तुम बच्चों को यह खुशी रहनी चाहिए कि हमारा बाप ,बाप भी है ,शिक्षक भी है।तुम्हारा सारा दारोमदार पढ़ाई पर ही है।जो कुछ भी करते हो अपने ही लिए।आत्मा को परमात्मा से वर्सा मिलता है।अपने को आत्मा समझकर बाप को तो बहुत प्यार से याद करना है।मां को याद नहीं करना है।बाप कहते हैं कि मुझे याद करो।मां जगत–अम्बा को भी शिवबाबा से वर्सा मिलता है।वो ही ज्ञान सागर है।तो जरूर (ज्ञान) देते हैं ना।अच्छा, बेहद के मात–पिता को सर्विसेबुल बच्चों को यादप्यार गुड नाइट।